

362
songs /
vids

348		I
-----	--	---

श्री १५३ अकार ज्ञाने स्तुति ५५ ॥ १५३ ॥

सप्तमः सर्गः १

ॐ नमः श्रीवर्जसत्वाय ॥ १ ॥ नागसेववः नालः ॥ उपा ॥ असु
 म्ना चैन कन कमालिमयः नाना रत्न प्रकृतिता २ चतुव
 द्विपसंगमः मधुमे रमाऽः श्रीवर्जसत्तुव विजयिया २
 सुभरका कनमनि किं वयसयया लास्क वस्तुन विराजिता
 २ श्रीगुरल्लसुनसदृसनाथाः रत्नमकुलनिर्झनयामि २ प
 थमनन श्रीगुरमकुल अर्चिता चनन कमवसिपधवि

सप्तमः सर्गः १

सप्तमः सर्गः २

या २ यंका यजान पूर्वविदे हा वंका यजान जाम्बादिप २ पश्य
 नग्वदा वयिः बंडल्लनगुर्वे विविधिवलसपूर्व २ याउपदि
 यं वाउदियः लाउपदिय वाउपदिय २ गजवल पूषवल
 अस्ववल मीवल शवजवल मालिबल चक्रवल वा सर्व
 निधानसपूर्व ॥ १ ॥ नागयज्ञं जपि ॥ नालमा ० ॥ अनिय अ
 वलजलजीवनमाऽः भर्ममकुल चक्रयाया २ वर्जय अ वसन

सप्तमः सर्गः २

जानसयवा यपिरुपि हनुववाया ॥ ५ ॥ दाभा नुन वयिया २
 पुन्य कनुना आलिंगन हनुववययिया २ वर्जवावाहि आलि
 नभसम्वय नुन वयिया २ कृमिसंविपंविपं ध्वज उहि २ नहि २
 कृमसमभन २ अनहनसर्वदव वर्जवादिग भवनिव
 यनसी ला व २ यिनु वननु कृ नु कृ गायरावादा यिनु वननु कृ
 य कृ विवा २ यिनिनु वन न वनाट ध्वज पसा लिपि रु लिप्य

यो नु का का व २ अहिनि श्रीस नुगु नु वा वागु वागु क्कादिग वागु
 व अला व २ ऊनामवध रुयवधन भावय रुयभा नु गगध
 संलावा ॥ ॥ २ ॥ गग लेव वि ॥ नाल इर्जमान ॥ कृ आ चन विधिप
 क्षीयहाव यूजयामिन दव गुना २ वि वि धिउपहाव न न्यग
 नववः उम नु व ध्वनि समंजला ॥ ५ ॥ ॐ वर्जामु नोदक
 मधुकिनि सम ला वरु लावक अद्वय वपं ॥ गला असुवहि

कृ आ वन २

॥ अहि नु

श्रीलक्ष्मीमहाकालः ॐ सुप्रतिष्ठितं वर्द्धस्वाहा २ कनककृष्णम
 विवर्णविभूषणं पटं पञ्चपल्लवपुष्पसहितं २ पञ्चमृगः पञ्च
 बलः पञ्चसिद्धिपञ्चवृद्धिर्निर्धनं २ लाजाश्रुतः इवार्क
 सुसहिताः वर्द्धचार्यमनुन्या २ दाकिनीनामा गच्छुर्वाहा
 रुपिणीवीजविषयवसङ्गा २ सत्तुष्टुचन्दनकृष्णचर्चन
 कं अतिमधुसूखरुलदायुमहा २ नमस्कृतं पञ्चशुभ्रवर्णम

सुलाकावर्ग्या नरास्कृतसदृसा ॥ ३ ॥ नागवसकललि
 त ॥ गालइर्जमान ॥ कम्पनीलराजनयं चक्रेनस्वरावः कंका
 यधवकृष्णबीजमृत्युनाः निवासिन्महाकावः तवमामकि
 सूचसूदयिनवजीवना २ नमामिभीदेवी वावृष्णीलक्ष्मीः
 वर्जामृतेष्वर्द्धश्रुतादकंः आलिङ्गयदध्वरुः रुषिमास
 नस्थितः भवमुखविनयश्च श्रुतवर्द्ध २ श्रुतादध्वरु

कम्पनील ४

वावृष्णीवर्द्ध ॥

भाविगदकः कनवानभनरुयद्वितीयकप २ या भां क भ स पु वः
 धजगताप ७ वनदकपुधमसर्वः सपनउर्दुलुजठटक धन
 वर्जव चवदागकम ७ ल २ वि ७ ल मूद्रववर्जवानगभयकि
 गदन कभां २ २ हं ह ही की हकावहव न व ७ ७ तु क म
 काकाव ला वयकि २ न व क २ अ म य ल प ल ज वा व नी प व
 ना व वर्ज नु न था धा य के ॥ ५ ॥ ७ ॥ म धू म न गाला ॥ ३ प

गाल ॥ ॥ नीलवर्णवावृणीदवी चक्रि ७ ल कालिकाः ला च
 क्रम यलः नूषिता २ न मा मि २ देवी श्री मा म कीः सु मान म रु कि
 संपूजिता २ स्वस्ववीजा रु व स मृत्य नाः न व जी व न सू व सू द
 नीः पंचरु ७ अ म न प के ॥ दिन स्व न पाः सु ना सू व न के व नि
 ना २ ज न म २ रु ज प यि स व ७ ७ अ नू रु व सि द्वि म मृ द्वि सि द्वि
 ॥ ५ ॥ ७ ॥ जा ग गु ऊ नि ॥ इ ऊ मा न गाल ॥ ॥ पी न व ७ मा म

गोपवर्णः ५

वापुनार्चन ॥

श्रीगणेशाय नमः

कीदवीविष्णु व्यापिका श्रमृत्तयानल प्रयगात्र ५ दवी २
नवजीवन शैलाकः सुवसुदनी स्वस्वनी कृष्णसमृत्यना ॥
चक्रिकुण्डल कालिलोचकमयलाः नक्षत्राग्रविष्टिनाः
नमामि श्रीगारुडादवीसुवध्वजः पूजयामिमभावाकिताः
अष्टगुणचक्र प्रथमामितृणाः श्रुतुनसिद्धिर्षुपदं ॥
॥ श्री ॥ ॥ गगनाटक ॥ इक्ष्माणातल ॥ चक्रवर्त्तुनियली

वात्रस्थानम् ॥

किं वक्ष्ये

यनसुदविः सुखादमरुजकलननु॥ तुष्कदवी वावृणीमामवि
 दवीरुजगन प्रभादिनेमयनसुनग॥ ५॥ आगमव्यदपु
 नानवयानेऽगः धर्मदेकागुवृत्तयदे॥ ५॥ पक्ववृद्ध-
 स्वपुपसतुष्कः सहस्रयागिणीलयाहवृवनुहवृव॥ ५॥
 सतुगुर्वचन॥ सिधंगन धरियाः तेनयिवाक्यवर्तुसु
 नानसुदपिणी॥ ५॥ १॥ आगकह॥ सदकंकालकाल॥

वाङ्मयम् ॥

卷之五

हविर्गवर्ग

हविर्गवर्गमिदिविनमनसुदनीः नवजीवनलावनल्लाहा ॥
शुद्धदममकी वारुणीदवी ॥ सुखादभरुजा रत्ननरु
कदमपर्ववृक्षस्वरुपाः शुद्धयोगिनीध्वनि ॥ ॐ ॥ हकी
नवाहवर्गवर्गः होकावगनासुनः कीकावनी योहका अ
मसाकाव ॥ ॐ ॥ सुदुगुनवनलभियगतधविद्याः नन। य
सिद्धिदुदुदो वाधगीता ॥ ६ ॥ वागगवाधहवव ॥ ना

वागगवाधहवव

अश्वमेध	348	I
---------	-----	---

210

॥ सप्तम्या चक्र कथय ॥

गमयइ विंमं धा जष के डू। यं. बुमानि द्यो

ॐ ॥ सकलं । सिद्धं मा हर्ता ह्येकं । सिद्धं च कायं त्रियकं ॥ ६
ॐ नमो श्री कृष्णाय ॥ ॥ ॐ नमो श्री सूर्याय ॥ ॥ वाक्कायनक विधा
ना ॥ ॥ सर्गो धोः कृष्णकं । सिद्धं मा हर्ता ह्येकं । सिद्धं च कायं त्रियकं ॥ ६
ना ॥ ॥ श्री सूर्याय ॥ गुणपादाय ॥ पंचगव्यं धनं ॥ धनं गुणमलु
लदनकं ॥ लोकपात्रवलिधूनकाय ॥ सर्गो धोः कृष्णकं । सिद्धं मा हर्ता ह्येकं । सिद्धं च कायं त्रियकं ॥ ६
मया ॥ धनं ॥ ॐ श्री ध्वनी पद्माद्यादि ॥ ॥ अ. पा. पू ॥ स्नानवायं ॥
मत्तयागते ॥ पू. ला. सु ॥ नैवेद्यं फलं धूपं मत्तं त्रायं शकृता न

पूजा ॥ धनं सूर्यमलुलपूजा ॥ किं वचो न्य ॥ वाक्काय ॥ तत्र सूर्यमलु
लतावयं यादि ॥ किं वचो न्य ॥ धूनकाय ॥ लीखनं स्नानं साइइ
पंचामृतं नैवेद्यं ॥ पादाय नैवेद्यं ॥ श्रीमत् श्री सूर्यदेवता हृदा नैवेद्यं
चयं कमपाय पादाय नैवेद्यं नमः स्वाहा ॥ स्नानवायं ॥ धनं च वक्ष्य
ग्वत् ॥ १२ जा किं स्नानं ददं किं ॥ १३ वायं ॥ वाक्काय ॥ ॐ नमो श्री सूर्याय स्वाहा
ॐ नमो श्री सूर्याय ॥ धनं च वक्ष्य ॥ श्री सूर्याय नमः ॥ नमो श्री सूर्याय

नक्रपूष्य ॥ नेवध ॥ सत वरुणाविय ॥ तायहाय ॥ ऊधर्मात्तादि ॥
लीप्रा ॥ अर्घ्याय ॥ दानवाक ॥ काय ॥ यजमानस्यय धानापीपू
धावतीपापप्रमाचनाय अस्मिंदेनैत्यादि ॥ ॥ धाल १२ ॥ धूतिधू
नका ३१ ॥ स्वानाकेतने ॥ गुणपूजा ॥ दक्षिण ॥ द १२ मार्ग ॥ द १२
धालियात ॥ रुमापन ॥ धन ॥ सिद्धमुक्काया ॥ शमनन ॥ सि
द्धकाय ॥ रुसकककन्य ॥ हंगविय ॥ धूतिसूर्यदंडायातमतविय ॥

धूतिधूनका ३१ नयस ३१ ॥ कलपूजायाय ॥ मालकधपनायाय ॥
धूनका ३१ ॥ पूजाहसकस्यया ॥ नडाहानाकाय ॥ गुणमधुल ॥ लोकपा
ववलि ॥ रुमापन ॥ सिद्धकायहपूजा ॥ नहस्यकाय ॥ समाधिदन ॥ ॥
कलपूजा ॥ धार्मि ॥ त्वापपूजा ॥ धूतिधूनुनी ॥ धालिनकिर्नी ॥ वाहान
याक ॥ वविपियाहय ॥ स्वहिससान्य ॥ गुणमधुलदनक ॥ लोकपाज
वलि ॥ रुमापन ॥ निगाऊन ॥ मरु ॥ ना ॥ सगनभय ॥ वरुहकाय

सिकलूय ॥ वज्रकाय ॥ ॥ वाक्रपूजा ॥ स्वाकिर्न ॥ गुद्रपूजा ॥
 दक्षिण ॥ पंचाक्ष ॥ सगताय नमः ॥ कलमककाय ॥ अतिथकवि
 य ॥ ऊजमानाये नमः ॥ सिक्रतिक ॥ मधुलखानविथ ॥ समपाचक्र ॥
 वायः ॥ अपिक्काय ॥ यजमानया ॥ मधुलः कलमः लुताकायः
 अनवल्लिष्टाय ॥ वाह्वनकया कलमपूजा विधिरुला ॥ ॥



